प्रतीक विज्ञान

भारतीय ऋषियों की अनेक खोजों में से **'प्रतीक विज्ञान'** की खोज एक अति महत्वपूर्ण खोज है । यह विज्ञान जनसाधारण की सुविधा के लिए एक सरलीकरण की प्रक्रिया है और इसीलिए अधिकांश वैदिक वाङ्मय प्रतीकों की भाषा में लिखा गया है तथा इन प्रतीकों को हमारे कवियों, लेखकों, दार्शनिकों ने अपने लेखनों में बहुतायत से प्रयोग भी किया है ।

1. प्रतीक विज्ञान का विस्मरण:- हिन्दू समाज अपने ज्ञान के विज्ञान को भूल गया था, अतएव निर्बल हो गया । फलत: विदेशी आक्रान्ताओं द्वारा पराजित हुआ तथा उसे एक सहस्त्र वर्षों तक अनेक प्रकार की प्रताड़नाओं को सहन करने के लिए बाध्य होना पड़ा। **इतना ही नहीं, इस काल में ज्ञान-विज्ञान के स्रोत ग्रंथ, शास्त्र, संहिताए और पता नहीं क्या-क्या जलाकर नष्ट कर दिये गये एवम् देश से बाहर भी ले जाए गए ।** गुरुकुल, विद्यालय, आश्रम आदि सब नष्ट कर दिए गये । 9 दिसम्बर से 13 दिसम्बर, 1998 को दिल्ली में हुए वेद सम्मेलन में यह बतलाया गया, कि वेदों का 90% साहित्य नष्ट कर दिया गया है अथवा बाहर चला गया है । मात्र 10% साहित्य ही शेष है । इस सब का परिणाम यह हुआ, कि देश घोर अज्ञानांधकार में डूब गया ।

अत: आज पूरा हिन्दू समाज, प्रतीकों के विश्लेषणात्मक ज्ञान के अभाव में गहरी भ्रान्ति में डूबा हुआ है । ***वह प्रतीकों एवम् कथाओं को सत्य मान बैठा है ।*** अँग्रेजों ने हमारे ग्रंथों को ठीक से अध्ययन करके बहुत पहले ही बतला दिया था, कि हमारे सारे लेखनों का आधार मानवीकृत प्रतीक हैं अर्थात् Personified Symbols हैं, पर यह बात हमें अब तक समझ नहीं आई । ऋषियों का अध्ययन समग्रतापूर्ण था, परन्तु ***जब-जब विज्ञानसम्मत विचारों वाले विद्वानों का देश में अभाव हुआ है, तब-तब वैदिक धर्म को गहरी चोट खानी पड़ी है, जिस चोट की चुभन समाज को सदियों तक झेलनी पड़ी ।***

2. प्रतीक का अर्थ:- किसी भी बड़ी अथवा विशाल वस्तु अथवा प्राणी का छोटा प्रतिरूप **'प्रतीक'** कहलाता है। जैसे चित्र, मूर्ति, नक्शा, चिन्ह, अक्षर, फिल्म, ज्यामिति एवं बीजगणित में प्रयुक्त सांकेतिक चिन्ह आदि ये सभी किसी अन्य को व्यक्त करने के साधन हैं। यथार्थ में ये सभी स्वयं वह न होकर, उस वस्तु अथवा प्राणी के प्रतिनिधि हैं और ऐसे प्रतिनिधि हैं, जिसमें उस वस्तु अथवा प्राणी के सभी गुणों का समावेश मान लिया जाता है। सभी देशों में राष्ट्रध्वज को पूरे राष्ट्र का प्रतीक माना जाता है और ध्वज का अपमान राष्ट्र का अपमान माना जाता है। इसी सिद्धान्त के आधार पर सम्पूर्ण वैदिक वाङ्मय का लेखन किया गया है। इस सम्बन्ध में निम्न पंक्तियों में विस्तृत जानकारी देने का प्रयास किया गया है।

2 (a) **चित्र एवम् मूर्ति:-** जैसे स्वामी दयानन्द जी का चित्र स्वयं स्वामी दयानन्द नहीं है, फिर भी हम उस चित्र का इसी भावना से सम्मान करते हैं, जैसे कि साक्षात् स्वामी जी का किया जाना चाहिए । भगवान राम की मूर्ति के समक्ष अपने हृदय में भक्ति-भाव जगाने के लिए पूरी श्रद्धाभाव से प्रणाम किया जाता है, यद्यपि मूर्ति स्वयं श्रीराम जी नहीं है ।

2 (b) **ज्यामिति (Geometry):-** किसी बड़ी से बड़ी नदी की चौड़ाई नापनी हो, तो यह बिलकुल आवश्यक नहीं है, कि नदी के पानी पर फीता डालकर उसे नापा जाये, बल्कि इसकी चौड़ाई मात्र नदी के किनारे पर एक त्रिभुज की परिकल्पना करके नापी जा सकती है । इसी प्रकार किसी पहाड़ की ऊँचाई अथवा घेरा आदि सिर्फ ज्यामिति की सहायता से गणित किया जा सकता है ।

2(c) बीजगणित (Algebra):- बड़े-बड़े कठिन प्रश्नों को बीजगणित द्वारा प्रयुक्त क, ख, ग (x, y, z) आदि चिन्हों की सहायता से हल कर लिया जाता है । Integral और Differential Calculus के माध्यम से बहुत ही सूक्ष्म एवम् कठिन आकृतियों का माप काफी ठीक-ठीक किया जा सकता है ।

2 (d) **सांकेतिक चिन्ह:-** रसायन शास्त्र एवम् भौतिक शास्त्र की गूढ़तम खोजों को व्यक्त करने के लिए x, y, z, a, b, c, α, β, γ, O, H, C, N इत्यादि चिन्ह ही साधन हैं । आइंस्टीन ने $E = mc^2$ का सूत्र दिया, जिससे एटम बम भी बना एवम् न्यूक्लियर भट्टियाँ भी बन गयीं । अंतरिक्ष (space) की खोज हो अथवा कम्प्यूटर का प्रयोग, सर्वत्र चिन्हों का प्रयोग एक सर्वमान्य विधि है ।

2 (e) **अक्षर:-** मनुष्य के मन में उठने वाले विचार निराकार और अव्यक्त होते हैं। उनको समुचित रूप से व्यक्त करने के लिए वर्णमाला के अक्षरों (स्वर एवम् व्यञ्जनों) का सहारा लेना पड़ता है । यदि अक्षर न बने होते, तो भाषा न बनी होती और कोई भी मानव अपने विचार व्यक्त न कर पाता ।

2 (f) **ध्वज:-** किसी भी राष्ट्र का ध्वज उस राष्ट्र का प्रतीक माना जाता है, यद्यपि वह स्वयम् राष्ट्र नहीं है ।

अभी तक हमने विशाल से सूक्ष्म करने की प्रक्रिया के कुछ उदाहरण देखे, अब हम इसी सिद्धान्त को उलट कर प्रयोग करेंगे अर्थात् सूक्ष्म से विशाल बनाना भी सम्भव है, जैसाकि नीचे के उदाहरणों से स्पष्ट हो जाएगा ।

2 (g) **नक्शा:-** किसी भवन का नक्शा (Blue Print) यद्यपि स्वयम् भवन नहीं है, परन्तु उस बनने वाले भावी भवन का छोटा प्रतिरूप है, जिसके आधार पर मानव अपने बुद्धिकौशल से बड़े से बड़े सुन्दर भवन का निर्माण कर लेता है ।

2 (h) **फिल्म:-** प्रोजेक्टर पर घूमती हुई 70 mm की फिल्म पर जब पीछे से प्रकाश पड़ता है, तब सिनेमा के पर्दे पर भीमकाय चित्र उभरने लगते हैं ।

2 *(i)* **संस्कार:-** मानव के चित्तपटल पर संगृहीत संस्कार (Memories) अति सूक्ष्म प्रतीक अवस्था में होते हैं । इन्ही संस्कारों के वशीभूत मानव अनेक प्रकार के कर्मों को करता हैं ।

3. **मानव जीवन और उसका लक्ष्य:-** इन्हीं उदाहरणों को ध्यान में रखते हुए ऋषियों ने अनुभव किया, कि मानव जीवन की परिपूर्णता इसी में है, कि हम प्रतीकों का लाभ उठाकर प्रकृति के बड़े से बड़े रहस्यों को उद्घाटित करें एवं उन रहस्यों की जानकारी के पश्चात् मानव को उसके चरम लक्ष्य अर्थात् ईश्वर तक पहुँचा दें । इसी बात को गम्भीरता पूर्वक मनन करते हुए भारतीय ऋषियों ने खोज निकाला, कि जो कुछ परमाणु में घटित हो रहा है, ठीक वही सब कुछ ब्रह्माण्ड में भी घटित हो रहा है और उन्होंने सिद्धान्त दिया, **''यथापिण्डे तथा ब्रह्माण्डे''** (as the microcosm, so the macrocosm) **उन्होंने यह भी पाया, कि मानव पूर्णरूप से ब्रह्म का प्रतिरूप है । यह सृष्टि परब्रह्म का शरीर है और वह अव्यक्त परमात्मा उसका अधिष्ठाता । इसी प्रकार मानव शरीर में ''परमात्मा'' का वास है, जिसे 'आत्मा' कहा गया है । हम परमात्मा को बाह्य जगत में खोजने के स्थान पर स्वयम् के भीतर खोज सकते हैं, मात्र मन को एकाग्र करने की आवश्यकता है। यह खोज भारतीय वैज्ञानिकों की सर्वोत्तम खोज है, इसी का नाम है ''योगविद्या''। योग का अर्थ है - ईश्वर से जुड़ना। ईश्वर से जुड़ने (मिलने) के अनेक मार्ग हैं, परन्तु सभी मार्गों का केन्द्र बिन्दु है-''मन को एकाग्र करना'' अर्थात् ''ध्यान (Meditation) एवम् समाधि''।**

इस बात को थोड़ा गहरायी से समझें। जब कोई भी चित्रकार, मूर्तिकार अथवा संगीतकार अपने मन की गहराइयों में उतरता है, तभी उसके चित्र अर्थात् मूर्ति व उसके गायन में उत्कृष्टता आती है और तभी उस व्यक्ति की साधना की सर्वत्र प्रशंसा भी होती है । इसी प्रकार परमात्मा को भी **ध्यान-साधना द्वारा मानव अपने चित्तपटल पर अनुभव कर लेता है, तब फिर उसका बारम्बार का जन्म-मरण का चक्र टूट जाता है । इसी को जीवन का चरम लक्ष्य अथवा ''मोक्ष की प्राप्ति'' कहा गया है ।**

प्रतीकों से मानव अनेक क्षेत्रों में लाभान्वित होता रहा है, अतएव ऋषियों ने इस सिद्धान्त को अध्यात्म के क्षेत्र में भी लागू किया तथा **'मुक्ति'** एवम् **'मोक्ष'** तक पहुँचने की विधि को खोज निकाला । इस लक्ष्य की प्राप्ति हेतु अनेक प्रकार के प्रतीकों की रचना की गयी । यह विषय अत्यन्त विशद ही नहीं गम्भीर भी है, फिर भी निम्न पंक्तियों में संक्षेप से चर्चा करने का प्रयास किया जा रहा है ।

4. विराट में दैवी शक्तियाँ:- प्रकृति में दो प्रकार की दैवी शक्तियाँ है:-

(i) भौतिक, एवं *(ii)* सूक्ष्म । ''जो शक्तियाँ इन्द्रियों के अनुभव में आती है, उन्हें भौतिक तथा जो इन्द्रियातीत हैं, उन्हें सूक्ष्म शक्तियाँ कहा गया है ।

4 (a) भौतिक शक्तियाँ:- इन्द्र, वरुण, अग्नि, सूर्य, चन्द्र, वायु, तारे, ग्रह तथा आकाशगंगा के नक्षत्र इत्यादि भौतिक शक्तियाँ है । ऐसा लगता है, कि इन सभी दैवी शक्तियों का वैज्ञानिकों, कवियों एवम् चित्रकारों द्वारा सम्मेलन करके एक मत से चित्रांकन तथा मूर्तीकरण किया गया । उदाहरण के लिए वायु देवता को एक सौम्य पुरुष के रूप में सिर पर मुकुट पहना दिया गया तथा दोनों ओर दो बड़े-बड़े पंख लगा दिए। इसी प्रकार अग्नि को एक मुकुटधारी पुरुष, हाथ में हवि का चुरू लिए अग्नि की ज्वालाओं के मध्य स्थित चित्रांकन किया गया । इन दैवी शक्तियों के गुणों का सही-सही समावेश चित्रों अथवा मूर्तियों में करने का प्रयास किया गया और ये सभी चित्र हमें विरासत में मिले हैं। देवता वे शक्तिपुञ्ज हैं, जो सृष्टि को चलाने हेतु निरन्तर निष्काम सेवा में रत रहते हैं तथा जिनके चारों ओर प्रकाश तथा आकर्षण बल भी है । देवताओं के चित्रांकन में इन्द्र को सभी देवों का राजा चित्रित किया गया है । भयंकर गर्जना करता हुआ मेघ ही इन्द्र के नाम से जाना जाता है । गरजते मेघ में करोड़ों वोल्ट की बिजली का बल होता है । इस बिजली को ही बज्र कहा गया है । जहाँ कहीं भी बज्राघात हो जाता है, वहाँ पर दूर-दूर तक भारी विनाश होते देखा गया है । इसके अधीन अग्नि, वायु, वरुण आदि देवता कार्य करते हैं। यदि ध्यान से विचार करें, तो स्पष्ट हो जायगा कि विद्युत एक ऐसी शक्ति है, जो सभी पदार्थों में व्याप्त है तथा इस विद्युत से पृथ्वी, अग्नि, जल आदि सभी के चक्र संचालित होते हैं । भौतिक सुखोपभोग के समस्त साधन विद्युत द्वारा प्राप्त किए जा सकते हैं । इसीलिए इन्द्र से जुड़ी भोग-विलास की कथाओं का विशाल साहित्य पुराणों में मिलता है तथा इन्द्र का ऐश्वर्य आदर्श माना गया है । विज्ञान का कथन है, कि ब्रह्माण्ड में अब तक की जानकारी के अनुसार दो सौ से अधिक कण मिले हैं । इन में से पांच कण तथा इनके प्रतिकण पूरी सृष्टिकाल तक स्थायी रहते हैं जबकि आठ कण अन्य अस्थायी कणों की अपेक्षा अधिक स्थिर हैं, जिन्हें पौराणिकों द्वारा गंधर्व, किन्नर, अप्सरा आदि नामों से चित्रित किया गया लगता है । वे सभी कण इन्द्र के दरबार में नाचने-गाने वाले सेवक आदि बतलाए गये हैं ।

ऋषियों ने आकाशगंगा के नक्षत्र (कृतिका, भरणी, रोहिणी इत्यादि), सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु एवम् केतु ग्रहों के 'आकर्षण-बलों' का ठीक-ठीक पता लगाया तथा इनका मानव जीवन पर क्या अच्छा अथवा बुरा प्रभाव पड़ता है, इस बात को गहरायी से अध्ययन करके फलित ज्योतिष में शामिल किया । ग्रहों के बुरे प्रभाव को कैसे कम करें, इसकी खोज की, इसीलिए हर मांगलिक कार्य के पूर्व नव-ग्रहों का पूजन मंगलदायक बतलाया गया है । ***राहु एवम् केतु छाया ग्रह हैं, परन्तु इनके द्वारा प्रसारित अति-बैंजनी (Ultra Violet) तथा सुर्ख लाल (Infra Red) रंगों का मानव जीवन पर निश्चित रूप से प्रभाव होता है ।*** पुस्तक के भाग-2 के पाँचवें सत्र में इस बात को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है ।

4 (b) सूक्ष्म शक्तियाँ:- ब्रह्माण्ड में भौतिक शक्तियों के अतिरिक्त अव्यक्त चेतन शक्तियाँ भी हैं, जैसे- ब्रह्मा, विष्णु, शिव, सरस्वती, लक्ष्मी, पार्वती, गणेश, हनुमान एवं

स्वामी कार्तिकेय आदि । ये शक्तियाँ एवम् अव्यक्त चेतनबल स्वयं को व्यक्त करने हेतु भौतिक संसाधनों को आधार बनाते हैं । जैसे ब्रह्मा, विष्णु एवम् शिव क्रमशः एलेक्ट्रॉन, प्रोट्रॉन एवम् न्यूट्रॉन तारा समूहों के माध्यम से स्वंय को व्यक्त करते हैं ।

4b *(i)* ब्रह्मा (एलेक्ट्रॉन तारा मण्डल में व्याप्त):- परमाणु की रचना में एलेक्ट्रॉन कण ऋण-विद्युत से आवेशित रहता है तथा निरन्तर नाभि के चारों ओर 600 मील[a] प्रति सेकंड की गति से चक्कर लगाता रहता है । इस अत्यन्त उच्च गति के कारण एक बल प्रोटॉन के भीतर से कार्य करता है, जिसे centripetal force कहते हैं, जो एलेक्ट्रॉन को अपनी कक्षा से दूर भागने नहीं देता और गति को भी ठीक से बनाए रखता है । भौतिक जगत की सम्पूर्ण सृजन क्रिया एलेक्ट्रॉन के द्वारा ही पूर्ण होती है । क्योंकि यह प्रोटॉन के चारों ओर चक्कर लगाता है, अतएव इसका नाम ब्रह्मा अर्थात् ब्रह्म की आवृत्ति (चक्कर) करने वाला कहा गया है । संस्कृत भाषा की विशेषता यह है, कि हर किसी के नाम की शब्द-रचना में ही उस वस्तु अथवा व्यक्ति विशेष की प्रवृत्ति (गुण एवम् कर्मों) का पूरा-पूरा समावेश रहता है । परमाणु रचना के अनुरूप ही हमारी आकाशगंगा की रचना भी है, अतएव हमारी आकाशगंगा के चारों ओर भी एलेक्ट्रॉन तारों (सूर्यों) का एक बहुत बड़ा समूह सतत् चक्कर लगाता रहता है । इस प्रकार आकाशगंगा की कालगणना इन सूर्यों द्वारा किए गये चक्करों पर आधारित है । इकत्तीस नील, दस खरब, चालीस अरब, ($31,10,40 \times 10^9$) मानव वर्षों में यह एलेक्ट्रॉन तारा समूह (ब्रह्मा) के सौ वर्ष पूरे होते हैं, तब आकाशगंगा का कार्यकाल समाप्त हो जाता है और यह महाकाश में अदृश्य हो जाती है। ***इस एलेक्ट्रॉन तारा समूह के पीछे जो अव्यक्त चेतन सृजनकारी बल कार्य करता है, उसे ब्रह्मा कहा गया है ।***

***4b (ii)* विष्णु (प्रोटॉन तारा मण्डल में व्याप्त):-** प्रोटॉन कण परमाणु रचना के महत्वपूर्ण अंग हैं। ये कण नाभि में शान्त भाव से स्थित रहते हैं और धन (+) विद्युत से आवेशित हैं । प्रोटॉन एवम् न्यूट्रॉन कण 10^7 एलेक्ट्रॉन वोल्ट[b] के बल से आपस में जुड़े रहते हैं । इस बल को नाभिकीय बल (Nuclear force) कहते हैं तथा प्रोटॉन कण एलेक्ट्रॉन कण को 10 एलेक्ट्रॉन वोल्ट के बल से पकड़ कर रखता है । इस बल को चुम्बकीय विद्युतबल[c] (Electro magnetic force) कहा गया है ।

पूरी सृष्टि में प्रोटॉन एवम् एलेक्ट्रॉन का जोड़ा ही एक मात्र ऐसा है, जो अत्यन्त बलशाली एवम् क्रियाशील शक्ति के रूप में कार्य करता दिखलायी पड़ता है । अतएव इस जोड़े को ही चैतन्य (जीव) कहा जा सकता है । गीता के अध्याय सात के श्लोक संख्या पांच में लगभग यही बात कही गयी है ।

यह जीवात्मा अपने कर्मों अर्थात् चित्त में इकट्ठी की गयी सूचनाओं के आधार पर बारम्बार जन्म लेता है एवम् मृत्यु को प्राप्त होता है । पौराणिक कथा के अनुसार विष्णु,

---

a P-80, Tao of Physics, 3rd Edition, Publishers M/s Flamingo

b & c P-253, Tao of Physics, 3rd Edition, Publishers M/s Flamingo

विराट के चित्त[a] हैं तथा वे (विष्णु) राम एवम् कृष्ण के रूप में पृथ्वी पर अवतरित होते हैं। विज्ञान की भाषा में कहें, तो चित्त में संगृहीत जीन्स (Genes) के कारण मानव का बारम्बार जन्म होता है। जीन्स को भारतीयों ने संस्कारों की संज्ञा दी है, क्योंकि आत्मा न तो जन्म लेता है और न ही मरता है। वह तो सर्वत्र व्याप्त है और कूट (Anvil) की भांति अचल है। इच्छा रहित, उदासीन इत्यादि उस आत्मा के गुण हैं । संस्कृत में **'विष'** धातु है, जिसका अर्थ है- सृजनशील अथवा गतिशील और यही गुण प्रोटॉन कण का है, अतएव प्रोटॉन कण को विष्णुबल का धारक माना गया है। ***"यथापिण्डे तथा ब्रह्माण्डे"*** सिद्धान्त के अनुरूप परमाणु की रचना और आकाशगंगा की रचना में समानान्तरता सिद्ध है, अतएव आकाशगंगा की नाभि में प्रोटॉन्स का जो एक विशाल तारा समूह स्थित है, ***उसके पीछे जो अव्यक्त चेतनबल कार्य करता है, उसी को ही विष्णु कहा गया है।***

4b (iii) **शिव (न्यूट्रॉन तारामण्डल में व्याप्त):-** न्यूट्रॉन कणों में सम (±) आवेश होता है और यह परमाणु की नाभि में प्रोटॉन के साथ गठजोड़ करके बैठा है । रामचरितमानस में कहा है –

जड़ चेतनहिं ग्रंथि पर गयी ।
जदपि मृषा छूटत कठिनई[b] ।।

इस गठजोड़ का बल सृष्टि में प्राप्त सभी बलों से अधिकतम है । इस बल को **'नाभिकीय बल'** (Nuclear force) कहते हैं । यदि न्यूट्रॉन के गुणों के व्यवहार पर दृष्टि डालें, तो इसके गुण परमात्मा के गुणों से मेल खाते हैं, जैसे उदासीन इच्छा रहित, कूटस्थ, अचल आदि । तो ये सारे गुण न्यूट्रॉन में मिलते हैं, अतएव जब परमात्मा न्यूट्रॉन के माध्यम से अपने आप को व्यक्त करता है, **तब यह न्यूट्रॉन, आत्मा का वाहक बन जाता है और जीव के साथ गठबन्धन करके यह जीवात्मा (जीव + आत्मा) बनता है तथा जब तक जीव तथा आत्मा का यह गठजोड़ बना रहता है, तब तक जीव जन्म लेता रहता है** । अतएव यदि न्यूट्रॉन को साहित्य की भाषा में कहें, तो शिव (शव + इव) अर्थात् मृत जैसा कह सकते हैं, **वैशेषिक दर्शन के प्रणेता महर्षि कणाद के अनुसार पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि, आकाश, काल, दिग्, आत्मा एवम् मन ये सब द्रव्य हैं अर्थात् भौतिक तत्व हैं । अतएव उपरोक्त कथन में न्यूट्रॉन को आत्मा का वाहक मानना ही उचित है** । आकाशगंगा का केन्द्रीय स्तम्भ करोड़ों न्यूट्रॉन तारा समूहों से निर्मित है, इसी तारा समूह के पीछे जो अव्यक्त चेतन बल कार्य करता है, उसी ***को शिव कहा गया है ।*** इस केन्द्रीय स्तम्भ का संक्षिप्तीकृत **'प्रतीक-रूप'** मन्दिरों में स्थापित **'शिवलिंग'** है । शास्त्रों का कथन है, कि एक निश्चित समय के पश्चात् हमारी आकाशगंगा के तीनों लोक अर्थात् **'ब्रह्म-लोक'**, **'वैकुण्ठ-लोक'** तथा **'शिव-लोक'** सभी शान्त[c] हो जाते हैं।

---

a & b श्रीरामचरितमानस लंकाकाण्ड दो. 15 एवं उत्तरकाण्ड दो. 116-117 के मध्य
c श्रीमद्भगवद्गीता - 8/16

सदियों से बैठे गहरे संस्कारों द्वारा उत्पन्न अति श्रद्धा के कारण उपरोक्त बातें सुनने में बहुत अटपटी लगती हैं। इसको इस प्रकार समझें, कि परमात्मा अजन्मा और **'अस्तित्व मात्र'** है, निरालम्ब है, सूक्ष्मतम शक्ति है और यह शक्ति अपने को सृष्टि के कण-कण के माध्यम से व्यक्त करती है। इसलिए हर पदार्थ का एक खास प्रकार का व्यवहार दिखलायी पड़ता है। **यदि वह परमात्मा 26 प्रोटॉन एवम् 30 न्यूट्रॉन संख्या वाली वस्तु से स्वंय को व्यक्त करता है, तब वह लोहा कहलाता है तथा जब वही परमात्मा 79 प्रोटॉन एवम् 117 न्यूट्रॉन संख्या वाले पदार्थ से व्यक्त करता है, तो वह स्वर्ण कहलाता है। बस यों समझिये, कि सृष्टि के निर्माण में प्रोटॉन एवम् न्यूट्रॉनों की संख्या का खेल है। प्रोटॉन एवम् न्यूट्रॉन की संख्या का कम या अधिक होना किसी खास पदार्थ का निर्माण कर देता है। इन्हीं प्रोटॉन एवम् न्यूट्रानों की संख्या को बदलकर एक पदार्थ को दूसरे पदार्थ में परिवर्तित किया जा सकता है।** रेडियम में 88 प्रोटॉन्स एवम् 173 न्यूट्रॉन होते हैं तथा यूरेनियम में 92 प्रोटॉन्स एवम् 140 न्यूट्रॉन्स। **अब इसी प्रोटान एवम् न्यूट्रॉन्स की संख्या को बढ़ाते जाइए बहुत सम्भव है, कि एक-कोष्ठकीय (uni-cellular) प्राणी से लेकर उद्भिज जगत, पशु जगत तथा मानव तक में मात्र प्रोटॉन्स एवम् न्यूट्रॉन्स की संख्या ही इन सबकी विभिन्नता एवम् उन्नत क्रियाशीलता तथा अति विकसित बौद्धिकता का कारण हो[a]। क्योंकि जीवन (Consciousness) तो मात्र एक ही है, शेष तो उस एक को व्यक्त करने के अवलम्ब मात्र हैं।**

4b (iv) **श्रीसरस्वती:**- एन्टी-एलेक्ट्रॉन धन (+) आवेशित कण सरस्वती शक्ति को धारण करते हैं। ब्रह्मा की पत्नी को सरस्वती के नाम से जाना जाता है, जो ज्ञान की देवी हैं। ब्रह्मा को सृष्टि का रचनाकार स्वीकार किया गया है, इसीलिए उनकी पत्नी को ज्ञान की देवी स्वीकार करना भी स्वाभाविक है। यह कहना कठिन है, कि इस स्वीकारोक्ति की पृष्ठभूमि में क्या विश्लेषण है। शारदा देवी, सरस्वती की एक मात्र पुत्री हैं, जो कला की देवी मानी जाती हैं। जैसे पृथ्वी का एक चन्द्रमा है, इसी प्रकार शारदा को सरस्वती का एक उपग्रह (Satellite) कहा जा सकता है।

4b (v) **श्रीलक्ष्मी:**- एन्टीप्रोटॉन ऋण (-) आवेशित कण, श्रीलक्ष्मी शक्ति को धारण करते हैं। विष्णु की पत्नी को विष्णु की चिरसेविका तथा धन की देवी के रूप में मान्यता दी गयी है। श्रीविष्णु सृष्टि के पालनकर्त्ता बतलाए गये हैं, तो उनके पास ध

---

a The basic force, on the other hand, which gives rise to all atomic phenomena is familiar and can be experienced in the macroscopic world. It is the force of electric attraction between the positively charged atomic nucleus and the negatively charged electrons. The interplay of this force with the electron waves gives rise to the tremendous variety of structures and phenomena in our environment. It is responsible for all chemical reactions and for the formation of molecules, that is, of aggregates of several atoms bound to each other by mutual attraction. The interaction between electrons and atomic nuclei is thus the basis of solids, liquids and gases also of all living organisms and of the biological processes associated with them. *Page-82-83, Tao of Physics, 3rd Edition, Publishers M/s Flamingo*

न का भण्डार होना स्वाभाविक है । यह साहित्यिक प्रतीक है तथा इसकी वैज्ञानिकता को खोजे जाने की आवश्यकता है । लक्ष्मी के कोई संतान नहीं है अर्थात् इनका कोई उपग्रह (Satellite) नहीं है ।

***4b (vi)* श्रीपार्वती :-** एन्टीन्यूट्रॉन सम (±) आवेशित कण पार्वती-शक्ति को धारण करते हैं । शिव पत्नी को परम सुन्दरी तथा बाद में शिव के साथ नृत्य करते हुए दिखलाया गया है । पार्वती द्वारा दुर्गा एवम् काली का रूप धारण करना एवम् असुरों का संहार करने की कथाओं की तर्कसम्मत व्याख्या इस लेख में सम्भव नहीं है । परन्तु पर्वत से उत्पन्न पार्वती अर्थात् Potential Energy को एक गुप्त एवम् अन्तर्निहित शक्ति अर्थात् Stored Energy तो समझा ही जा सकता है तथा यह भी तर्कसम्मत लगता है, कि Potential Energy अन्य शेष शक्तियों की जन्मदात्री है । सभी नौ शक्तियों की संस्कृत शब्द रचना तथा आधुनिक वैज्ञानिक शब्दावली सम्भवतः निम्न प्रकार से है:-

1. शैलपुत्री (Potential) **2.** ब्रह्मचारिणी (Magnetic) **3.** चन्द्रघण्टा (Sound) **4.** कूष्माण्डा (Chemical) **5.** स्कन्दमाता (Kinetic) **6.** कात्यायनी (Nuclear) **7.** कालरात्री (Thermal) **8.** महागौरी (Light) **9.** सिद्धिधात्री (Electricity) । जीवन को उत्पन्न करने तथा सुचारु रूप से चलाने का कार्य पार्वती-शक्ति द्वारा होता है तथा साधक द्वारा देवी की साधना करने पर पार्वती-शक्ति साधक की दुष्प्रवृत्तियों रूपी राक्षसों का संहार भी करती है । पार्वती के दो पुत्र गणेश एवम् कार्तिकेय हैं अर्थात् पार्वती के दो उपग्रह (Satellite) हैं ।

***4b (vii)* गणेश एवम् कार्तिकेयः-** श्री पार्वती के दो उपग्रह हैं। शक्ति से बुद्धि तथा शौर्य की उत्पत्ति स्वाभाविक है, इसीलिए 'बुद्धि' के देवता श्रीगणेश सृष्टि के योजना (Planning) मंत्री हैं और स्वामि-कार्तिकेय देवताओं अर्थात् दैवी शक्तियों के सेना नायक के पद पर प्रतिष्ठित हैं। क्योंकि परब्रह्म परमात्मा की बुद्धि का स्थान श्रीगणेशजी को प्राप्त है, इसीलिए कोई भी मांगलिक कार्य की पूर्णता हेतु इनके पूजन का विधान बनाया गया है।

***4b (viii)* हनुमानः-** हनुमान परब्रह्म परमात्मा के **'मन'** के प्रतीक हैं । हनुमान चञ्चल वानर हैं, परन्तु हैं अत्यन्त बलवान एवम् बाल ब्रह्मचारी । इनके जीवन के घटनाक्रम को अनेक कथाओं से जोड़ा गया है, जिनके अर्थ निकालने पर अनेक वैज्ञानिक रहस्यों का उद्घाटन हो सकता है[a]।

***4b (ix)* शेषनाग एवम् कुंडलनीः-** इसी प्रकार पृथ्वी को शेषनाग के सिर पर धारण किये हुए दिखलाया गया है, तो विष्णु जी को शेषशय्या पर स्थित । वास्तव में सृष्टि में चार प्रकार के बल हैं:-

(A) नाभिकीय बल (Nuclear force or Strong force)

(B) चुम्बकीय विद्युत बल (Electro magnetic force)

---

a इस प्रतीक के सम्बन्ध में विस्तृत चर्चा "उपास्य देवों की वैज्ञानिक व्याख्या" नामक लेख के अन्तर्गत की गयी है। इस लेख को पुस्तक के भाग-3 में देखें।

(C) गुरुत्वाकर्षण-बल (Gravitational force)

(D) क्षीण-बल (Weak force)

जहाँ कहीं भी शेषनाग अथवा सर्प दिखलाए गये हैं, वे किसी न किसी बल के प्रतीक हैं, जैसे- पृथ्वी को गुरुत्वाकर्षण बल तथा विष्णु जी को नाभिकीय बल धारण करता है। श्रीशंकर जी के शरीर पर के सर्प क्षीण-बल (weak force) के प्रतीक हैं।

सभी शक्तियों को सर्प, शेषनाग तथा सर्पिणी नामों से उद्‌बोधित किया गया है, ***क्योंकि शक्ति की गति तथा सर्प की गति समान होती है। प्रतीकों की भाषा ने ज्ञान के बीज की रक्षा करने में निश्चय ही बड़ी सहायता की है, परन्तु भ्रान्ति भी हुई है, क्योंकि हमने बिना समझे-बूझे शाब्दिक अर्थ पर विश्वास कर लिया, फिर हर विज्ञान की बात कालान्तर में अति श्रद्धा के कारण पूजा-भाव में तिरोहित होती गयी।*** हिन्दुओं के एक सम्प्रदाय का मानना है, कि ***अग्निहोत्र अर्थात् हवन ही यज्ञ है, जबकि यज्ञ का अर्थ है- निष्काम अथवा निःस्वार्थ सेवा, जो गीता का सार है। वास्तव में अग्निहोत्र (हवन) 'यज्ञ' का प्रतीक है।***

4 *(c)* अन्य साहित्यिक प्रतीकः- पौराणिकों द्वारा अन्यान्य साहित्यिक प्रतीकों की रचना भी की गयी है, जैसे- कामधेनु, कल्पवृक्ष, पारिजात, अमृत, सुमेरु-पर्वत, कैलाश, मानसरोवर, हंस, पारस, गरुड़, नन्दी, सिंह, चूहा, मोर, एरावत, शेषनाग, त्रिगुणमयी-माया, हलाहल-विष, कामदेव, रति, कर्मनाशा, गंगा, यमुना, सरस्वती नदियाँ, कच्छप, वासुकिनाग, मन्दराचल, क्षीर-सागर, गंगावतरण, समुद्र-मंथन इत्यादि।

5. साहित्यिक रूपान्तरणः-

5 (a) जैसा कि ऊपर ***4b(ii)*** में प्रोटॉन तारामण्डल को अव्यक्त चेतनबल भगवान विष्णु का वाहक बतलाया गया है, उसी के अनुरूप भगवान विष्णु की रतुति में साहित्य की भाषा में बड़े सुन्दर ढंग से प्रोटॉन्स के सभी गुणों का समावेश कर दिया गया है।

शान्ताकारम् भुजगशयनम् पद्मनाभम् सुरेशम्।
विश्वाधारम् गगन सदृशम् मेघवर्णम् शुभांगम्॥
श्रीलक्ष्मी कान्तम् कमलनयनम् योगभिर्ध्यानगम्यम्।
वन्दे विष्णुम् भवभय हरम् सर्वलोकैकनाथम्॥

अर्थः- शान्त है आकार जिनका, जो सापों की शय्या पर सोये हुए हैं; जिनकी नाभि से कमल निकला हुआ हैं, जो देवताओं के स्वामी हैं; जो विश्व के आधार हैं। आकाश की भाँति जो विस्तीर्ण हैं तथा जिनका रंग बादलों की भाँति है, जिनकी आँखें कमल के समान सुन्दर हैं। जो योगियों के ध्यान में कठिनाई से आते है, ऐसे विष्णु भगवान की जो संसार के भय का नाश करने वाले हैं, मै वन्दना करता हूँ।

प्रोटॉन कण नाभि में अति तीव्र[a] (40,000 मलि प्रति सेकंड) गति से घूर्णन करता है, अतः स्थिर (सोया-सोया) सा लगता है, इसलिए भगवान विष्णु को शेषशय्या पर लेटे

---

a P-84, Tao of Physics, 3rd Edition, Publishers M/s Flamingo

हुए दिखलाया गया है, जो आलस्य (तमस) का प्रतीक है । श्रीविष्णु जी की नाभि से कमल सहित कमलनाल निकलती है, जिस पर ब्रह्माजी विराजमान हैं। क्योंकि प्रोटॉन कण दस एलेक्ट्रॉन वोल्ट की शक्ति से एलेक्ट्रॉन को खींच कर रखता है तथा एलेक्ट्रॉन अत्यन्त नगण्य भार वाला होता है, अतः कमलनाल दस बोल्ट की Centripetal Force की प्रतीक है तथा ब्रह्माजी एलेक्ट्रॉन तारामण्डल में व्याप्त सृजनकारी अव्यक्त चेतन बल के मानवीकृत प्रतीक हैं।

क्योंकि प्रोटॉन एलेक्ट्रॉन के साथ मिलकर जीव कहलाता है तथा बारम्बार के जन्म-मरण का कारण बनता है, अतएव यह विश्व का आधार है। यह सृजनशील एवं गतिशील है, अतएव विराट में इसे विष्णु (विष्[a]+अणु) का सम्बोधन मिला है । यह आकाश की भाँति सर्वत्र विस्तृत है और इसका मेघ जैसा नीला रंग है। शेष साहित्यिक शब्दावली है।

5(b) इसी प्रकार अनुच्छेद ***4b(iii)*** में शिव से सम्बन्धित स्तुति निम्न प्रकार से की गयी है-

कर्पूरगौरम् करुणावतारम् संसारसारम् भुजगेन्द्रहारम् ।
सदा वसन्तम् हृदयारविन्दे भवम् भवानी सहितम् नमामी ॥

अर्थः- कपूर जैसा शुभ्र रंग है जिनका जो करुणा से परिपूर्ण हैं । वे संसार के सार हैं तथा जिनके गले में सर्पों का हार है, जो सबके हृदय में वास करते हैं उन भगवान शंकर को मैं पार्वती सहित प्रणाम करता हूँ ।

न्यूट्रॉन तारे का प्रकाश शुभ्र कपूर जैसा होता है और शिव जी के शरीर पर क्षीण बल (weak force) के प्रतीक के रूप में सर्पों के हार आदि पहने दिखलाए गये हैं । न्यूट्रॉन में कोई विद्युत आवेश नहीं होता । जिस प्रकार शव सदी-गर्मी, मान-अपमान एवम् दुःख-सुख जैसे मनोभावों के प्रति कोई प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं करता, उसी प्रकार न्यूट्रॉन कण द्वारा बाह्य जगत के प्रति कोई प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं की जाती अर्थात् यह कण शव की भाँति व्यवहार करता है । इसीलिये न्यूट्रॉन को भगवान शिव (शव+इव) का वाहक माना है । इसी प्रकार से जब मानव बाह्य जगत के प्रति कोई प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं करता, तब उसके अवचेतन मन पर किसी नये संस्कार की छाप नहीं पड़ती और वह व्यक्ति अपने पूर्व प्रारब्ध को भोग कर मोक्ष को प्राप्त हो जाता है, इसीलिए शिव को कल्याणकारी देवता कहा गया है । ऐसा लगता है, कि आकाशगंगा का बाह्य भाग एक खरब सूर्यों से निर्मित नाभिकीय भट्टियाँ हैं, अतएव ***"अनुलोम-विलोम"*** सिद्धांत के अनुसार आकाशगंगा का केन्द्र बर्फ से ढका होना चाहिए, क्योंकि प्रकृति में विरोधी बातें पायी जाती है, इसीलिए भगवान शंकर को हिमाच्छादित शिखर कैलाश पर विराजमान दिखलाया गया है । शिव की स्तुति में भवानी (Potential energy) के साथ प्रणाम करने को कहा गया है, क्योंकि बिना शक्ति के आशीर्वाद के परमात्मा प्राप्त हो ही नहीं सकता। शेष शब्दावली साहित्यिक है । भौतिक शास्त्रियों ने प्रयोग द्वारा पाया है, कि न्यूट्रॉन कण आसानी से टूट जाता है

---

a संस्कृत भाषा में 'विष्' का अर्थ सृजन करना, विस्तार करना अथवा फैलाना आदि होता है।

इसीलिए ऐसा कहा गया है, कि भगवान शंकर शीघ्र प्रसन्न हो जाते हैं । न्यूट्रॉन कण के टूटने से प्रोटॉन, एलेक्ट्रॉन तथा न्यूट्रीनों कणों की उत्पत्ति होती[a] है । इस प्रक्रिया को विज्ञान की भाषा में निम्न प्रकार से लिखा जाता है-

$$n \rightarrow p + \bar{e} + \bar{u}$$

इसका अर्थ यह हुआ, कि भगवान शंकर महान ईश्वर (महेश्वर) हैं तथा वे ब्रह्मा, विष्णु तथा रुद्र के जनक हैं । ऐसा लगता है, कि **रुद्र महेश्वर की (चल) शक्ति हैं ।** अत: संहार का कार्य करते हैं ।

5 *(c)* ब्रह्मा (एलेक्ट्रॉन कणों में व्याप्त):- एलेक्ट्रॉन कण 600 मील प्रति सेकंड की गति से न्यूक्लियस के चारों ओर तथा चारों दिशाओं में गतिशील रहते हैं, इसलिए ब्रह्मा को चतुर्मुखी बतलाया गया है एवं इनका कोई स्थायित्व न होने के कारण, इनके मन्दिर नहीं बनाए जाते । इस बात को श्राप की कथा से जोड़ दिया गया है ।

5 *(d)* वेद से लेकर सभी सद्ग्रंथों तथा सभी समय के कवियों द्वारा लिखित काव्यों, पुराणों ज्योतिषशास्त्र एवं रामचरितमानस में विशेष रूप से उपमाओं, दृष्टान्तों, कथाओं तथा प्रतीकों की भरमार है, ऐसा करने के कई मनोवैज्ञानिक कारण हैं।

(i) समाज में भौतिक विज्ञान को समझने वाले लोग अधिक नहीं होते हैं, अत: भारतीय मनीषियों ने विज्ञान की क्लिष्ट एवम् नीरस भाषा को सरस एवम् सर्वग्राह्य बनाने हेतु जनसाधारण के कल्याण के लिए मानवीकृत प्रतीकों की भाषा में रूपान्तरण किया था।

(ii) प्राइमरी कक्षा से लेकर मास्टर डिग्री तक की कक्षा के विद्यार्थियों के लिए उपासना के मार्गों का इन प्रतीकों एवम् कथाओं के माध्यम से विधान किया गया, ताकि श्रमिक वर्ग से लेकर ब्राह्मण समाज तक का हित हो और समाज का प्रत्येक व्यक्ति ईश्वरोन्मुख हो सके ।

(iii) प्रतीकों तथा कथाओं का मूल उद्देश्य था, कि सामान्य जन को किसी न किसी प्रकार से योग, ध्यान एवम् समाधि की ओर सरल से सरल उपायों द्वारा प्रेरित किया जाता रहे, जो ईश्वर को मिलने का एक मात्र मार्ग है ।

(iv) मानव जीवन की परिपूर्णता तभी है, जब सत्यम् (विज्ञान) का सुन्दरम् (साहित्य एवम् ललित कलाओं- जैसे वाद्य, संगीत इत्यादि) से उचित संगम हो, ताकि प्राणीमात्र का सम्पूर्ण शिव (कल्याण) हो । इस विधि का जनता ने हृदय से स्वागत किया और सम्पूर्ण भारतीय समाज सहस्त्रों वर्षों से इसका अनुगमन तथा अनुपालन करता आया है । **उपरोक्त शैली ने समाज को रस और आनन्द से विभोर तो कर दिया, परन्तु अति श्रद्धा एवम् विवेकहीन विश्वास के कारण हम भटके भी खूब । भारत में जब पहली बार रेल चली, तो हमने इंजन की आरती उतारी तथा जय काली के उद्घोष के साथ उसे विदा किया । आज समय आ गया है, कि नई पीढ़ी को विज्ञान सम्मत जानकारी दी जाए, नहीं तो अध्यात्म की सरिता अंधविश्वास के अंधकार में अथवा अज्ञानियों द्वारा मखौल उड़ाए**

a P-250, Tao of Physics, 3rd Edition, Publishers M/s Flamingo

जाने के कारण लुप्त हो जाने के कगार पर है । तो आइये ! हम सब मिलकर इसकी रक्षा करने का प्रयास करें ।

6. एक आशा:- इतने सारे भौतिक शास्त्र के तथ्यों को साहित्यकारों ने अध्यात्म में रूपान्तरित करके जन-साधारण का श्रद्धा भाव जगाकर ईश्वर उपासना के अनेक मार्गों का विधान सुझाया है । यह बहुत ही महान एवं गम्भीर शोध कार्य किस शताब्दी में हुआ है, इसकी सटीक जानकारी इस लेख में सम्भव नहीं है । हो सकता है, कि ये सभी समानान्तर बातें पाठकों को बहुत अटपटी लगें, परन्तु जिन्हें **पदार्थ-विज्ञान** तथा **'धर्मशास्त्र'** एवं **'साहित्य'** का समुचित ज्ञान होगा, वे इसे अपना वरदहस्त अवश्य प्रदान करेंगे । वास्तव में ऐसे लेख इक्कीसवीं शताब्दी की भावी पीढ़ी के लिए अवश्य लाभदायी होंगे, ऐसी आशा है ।

हरि: ॐ तत् सत् !